व्याकरण के पृष्ठ

❊ **शब्द –** एक या एक से अधिक अक्षरों के मेल को 'शब्द' कहते हैं जिसका कोई अर्थ हो ।

जैसे – मैं, तुम, अमरूद, लड़की, गाय, गधा, पढ़ना, खाना,पीना आदि ।

किसी वाक्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द आठ प्रकार के होते हैं :–

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया– विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक ।

❊ **संज्ञा –** किसी व्यक्ति, प्राणी, भाव, वस्तु या स्थान आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं ।

जैसे– मीरा, राम, गंगा, हिमालय, गंगोत्री, सुंदरता, भेड़, पुस्तक आदि ।

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं :–

व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान या किसी वस्तु विशेष का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे– राम, लक्ष्मण, शकुंतला, ताजमहल आदि ।

जातिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से एक जाति के सभी पदार्थों का बोध हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे – भेड़, बकरी, आदमी, पुस्तक आदि ।

भाववाचक संज्ञा – ''जिस शब्द से किसी गुण, दशा, भाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे– सुंदरता, वाल्यावस्था, पढ़ाई, कायरता आदि ।

❊ **सर्वनाम –** जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयु प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं ।

जैसे– मैं, हम, तू, जो, वह, आप, यह, वह, कुछ, कोई आदि ।

सर्वनाम के छह भेद हैं :–

१. पुरुषवाचक　　२. निश्चयवाचक　　३. अनिश्चयवाचक

४. संबंधवाचक　　५. प्रश्नवाचक　　६. निजवाचक

१. पुरुषवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम किसी पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर बोले जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे– तुम, वह, मैं, वे, हम, यह आदि ।

जैसे : वह गाँव जाता है ।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम– निश्चयावाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध हो । जैसे– यह, वे, वह आदि ।

जैसे : यह आम मीठा है, वह मीठा नहीं है ।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम– अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो । जैसे– कोई, कुछ ।

जैसे : ऐसा न हो कि कोई आ जाए ।

उसने कुछ नहीं खाया ।

४. संबंधवाचक सर्वनाम– संबंधवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट करते हैं ।

जैसे : जो देता है, सो लेता है ।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।

जिसकी लाठी, उसकी भैंस ।

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम–प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी प्रश्न का बोध हो ।

जैसे : क्या पढ़ रहे हो ?

तुम क्या खा रहे हो ?

अंदर कौन है ?

* **क्रिया** – ''जिसे शब्द से काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं ।''

जैसे– जाता है, दौड़ता है, पढ़ा, गाया, खाएगा आदि ।

* **लिंग** – लिंग का अर्थ है 'चिह्न' । संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति की जाती का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं । हिंदी में दो लिंग होते हैं– पुल्लिंग और स्त्रिलिंग ।

पुल्लिंग : पिता, पुत्र, बंदर, पुजारी, मोर, बाल, वृद्ध, स्वामी, तपस्वी आदि ।

स्त्रीलिंग : माता, पुत्री, बंदरिया, पुजारिन, मोरनी, बाला, वृद्धा, स्मामिन, तपस्विनी आदि ।

* **वचन:** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं । हिंदी में वचन दो है– एकवचन और बहुवचन । :–

एकवचन : शब्द के जिस रूप से एक ही पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं । जैसे– तोता, घोड़ा, भैंस, गाय, पुस्तक, नदी आदि ।

बहुवचन: शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं । जैसे : तोते, घोड़े, भैंसें, गायें, पुस्तकें, नदियाँ आदि ।

* **विशेषण :** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करे, उसे विशेषण कहते हैं । जैसे – काला घोड़ा, सफ़ेद फूल ।

विशेष्य– जिसकी विशेषता बतलायी जाए, वह 'विशेष्य' कहलाता है ।'

जैसे – 'काला घोड़ा' में 'काला' विशेषण है और 'घोड़ा' विशेष्य । 'अच्छा विद्यार्थी' में 'अच्छा' विशेषण है और 'विद्यार्थी' विशेष्य । 'तीस घोड़े' में 'तीस' विशेषण है और 'घोड़े' विशेष्य । इसी प्रकार दुबला आदमी, 'पालतू कुत्ता, गहरा कुआँ आदि ।

* **क्रिया विशेषण :** जिस शब्द से 'क्रिया' या दूसरे 'क्रिया–विशेषण' की विशेषता प्रकट हो , उसे 'क्रिया–विशेषण' कहते हैं ।

जैसे– राम धीरे–धीरे टहलता है । राम वहाँ टहलता है । वह अचानक आ गया । वह

प्रतिदिन मंदिर जाता है । पहले तोलो, फिर बोलो । उतना खाओ, जितना हजम हो। अब मैं क्या करूँ ? आदि । 'वह धीरे चलता है ।' इस वाक्य में 'धीरे' क्रिया-विशेषण है । 'वह बहुत धीरे चलता है ।' 'बहुत' भी क्रिया -विशेषण है, क्योंकि यह दूसरे क्रिया विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है ।

'समुच्चयबोधक'- जिस शब्द के सहारे वाक्यों को जोड़ा जाता है या अलग किया जाता है, उसे 'समुच्चयबोधक' अव्यय कहते हैं ।

जैसे- और, एवं, तथा, या, अथवा, नहीं तो, इसलिए, किंतु, लेकिन, बल्कि, यद्यपि आदि ।

संबंधबोधक- जिस शब्द से किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्य का संबंध किसी अन्य शब्द से सूचित होता है, उसे 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं ।

जैसे- के बिना, के साथ, के बदले, के आगे, के पीछे, के बाद आदि ।

विस्मयादिबोधक- जिन शब्दों से विस्मय, हर्ष, विषाद, शोक, घृणा, संबोधन, आदि भाव व्यक्त हो रहे हों उन्हें 'विस्मयादिबोधक' अव्यय कहते हैं ।

जैसे- उरे, वाह, आह, हाय, शाबाश, जय हो, अच्छा । इन शब्दों के बाद ! चिह्न दिया जाता है ।